

मङ्गलम्

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम् ।
अदीनाः स्याम शरदः शतम् भूयश्च शरदः शतात् ॥1॥

(यजुर्वेद 36.24)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो-
ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे अस-
नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥2॥

(ऋग्वेद 1.89.1)

भावार्थः

देवों द्वारा निरूपित यह शुक्ल वर्ण का नेत्र रूप (सूर्य) पूर्व दिशा में ऊपर उठ चुका है। हम सब सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक जीते रहें, सौ वर्षों तक सुनते रहें, सौ वर्षों तक शुद्ध रूप से बोलते रहें, सौ वर्षों तक स्वावलम्बी (अदीन) बने रहें और यह सब सौ वर्षों से भी अधिक चलता रहे ॥1॥

हमारे पास चारों ओर से ऐसे कल्याणकारी विचार आते रहें जो किसी से न दबें, उन्हें कहीं से बाधित न किया जा सके (अपरीतासः) एवम् अज्ञात विषयों को प्रकट करने वाले (उद्भिदः) हों, प्रगति को न रोकने वाले (अप्रायुवः) तथा सदैव रक्षा में तत्पर देवगण प्रतिदिन हमारी वृद्धि के लिए तत्पर रहें ॥2॥

© NCERT
not to be republished



1061CH01

प्रथम पाठः

शुचिपर्यावरणम्

अयं पाठः आधुनिकसंस्कृतकवेः हरिदत्तशर्मणः “लसल्लतिका” इति रचनासङ्ग्रहात् सङ्कलितोऽस्ति। अत्र कविः महानगराणां यन्त्राधिक्येन प्रवर्धितप्रदूषणोपरि चिन्तितमनाः दृश्यते। सः कथयति यद् इदं लौहचक्रं शरीरस्य मनसश्च शोषकम् अस्ति। अस्मादेव वायुमण्डलं मलिनं भवति। कविः महानगरीयजीवनात् सुदूरं नदी-निर्झरं वृक्षसमूहं लताकुञ्जं पक्षिकुलकलरवकूजितं वनप्रदेशं प्रति गमनाय अभिलषति।

दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम्।

शुचि-पर्यावरणम्॥

महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।

मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम्॥

दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्। शुचि...॥1॥



कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।

वाष्पयानमाला संधावति वितरन्ती ध्वानम्॥

यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संसरणम्। शुचि...॥2॥

वायुमण्डलं भृशं दूषितं न हि निर्मलं जलम्।
कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं समलं धरातलम्॥
करणीयं बहिरन्तर्जगति तु बहु शुद्धीकरणम्। शुचि...॥3॥

कञ्चित् कालं नय मामस्मान्गराद् बहुदूरम्।
प्रपश्यामि ग्रामान्ते निर्झर-नदी-पयःपूरम्॥
एकान्ते कान्तारे क्षणमपि मे स्यात् सञ्चरणम्। शुचि...॥4॥

हरिततरूणां ललितलतानां माला रमणीया।
कुसुमावलिः समीरचालिता स्यान्मे वरणीया॥
नवमालिका रसालं मिलिता रुचिरं संगमनम्। शुचि...॥5॥



अयि चल बन्धो! खगकुलकलरव गुञ्जितवनदेशम्।
पुर-कलरव सम्भ्रमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशम्॥
चाकचिक्यजालं नो कुर्याज्जीवितरसहरणम्। शुचि...॥6॥

प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा नो भवन्तु पिष्टाः।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान् समाविष्टा॥
मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम्। शुचि...॥7॥

शब्दार्थः

दुर्वहम्	- दुष्करम्	- कठिन, दूभर	- Difficult
जीवितम्	- जीवनम्	- जीवन	- Life
अनिशम्	- अहर्निशम्	- दिन-रात	- Day and Night
कालायसचक्रम्	- लौहचक्रम्	- लोहे का चक्र	- Iron wheel
शोषयत्	- शुष्कीकुर्वत्	- सुखाते हुए	- Drying
तनुः	- शरीरम्	- शरीर	- Body
पेषयद्	- पिष्टीकुर्वत्	- पीसते हुए	- Grinding
वक्रम्	- कुटिलम्	- टेढ़ा	- Askew
दुर्दान्तैः	- भयङ्करैः	- भयानक (से)	- Scary
दशनैः	- दन्तैः	- दाँतों से	- By teeth
अमुना	- अनेन	- इससे	- By thus
जनग्रसनम्	- जनभक्षणम्	- मानव विनाश	- Destruction of humans
कज्जलमलिनम्	- कज्जलम् इव मलिनम्	- काजल-सा मलिन (काला)	- Black as kohl
धूमः	- अग्निवाहः	- धुआँ	- Smoke
मुञ्चति	- त्यजति	- छोड़ता है	- Releasing
शतशकटीयानम्	- शकटीयानानां शतम्-	- सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ	- Hundreds of vehicles
वाष्पयानमाला	- वाष्पयानानां पंक्तिः-	- रेलगाड़ी की पंक्ति	- Row of trains
वितरन्ती	- ददती/वितरणं कुर्वाणा-	- देती हुई	- Distributing
ध्वानम्	- ध्वनिम्	- कोलाहल	- Sound
संसरणम्	- सञ्चलनम्	- चलना	- Movement
भृशं	- अत्यधिकम्	- अत्यधिक	- Enormous
भक्ष्यम्	- खाद्यपदार्थ	- भोज्य पदार्थ	- Eatable
समलम्	- मलेन सह	- मलयुक्त, गन्दगी से युक्त	- Dirty

ग्रामान्ते	- ग्रामस्य सीमायाम् (सीम्नि)	- गाँव की सीमा पर	- At village border
पयःपूरम्	- जलाशयम्	- जल से भरा हुआ तालाब	- Pond
कान्तारे	- वने	- जंगल में	- In the forest
कुसुमावलिः	- कुसुमानां पंक्तिः	- फूलों की पंक्ति	- Row of flowers
समीरचालिता	- वायुचालिता	- हवा से चलायी हुई	- Moved by wind
रुचिरम्	- सुन्दरम्	- सुन्दर	- Attractive
खगकुलकलरव	- खगकुलानां कलरवः (पक्षिसमूहध्वनिः)	- पक्षियों के समूह की ध्वनि	- Chirping of birds
चाकचिक्वजालम्	- कृत्रिमं प्रभावपूर्णं जगत्	- चकाचौंध भरी दुनिया	- Web of dazzle
प्रस्तरतले	- शिलातले	- पत्थरों के तल पर	- On the surface of the rocks
लतातरुगुल्माः	- लताश्च तरवश्च गुल्माश्च	- लता, वृक्ष और झाड़ी-	- Creepers, trees and shrubs
पाषाणी	- पर्वतमयी	- पथरीली	- Stony
निसर्गे	- प्रकृत्याम्	- प्रकृति में	- In the nature

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत -

- (क) अत्र जीवितं कीदृशं जातम्?
- (ख) अनिशं महानगरमध्ये किं प्रचलति?
- (ग) कुत्सितवस्तुमिश्रितं किमस्ति?
- (घ) अहं कस्मै जीवनं कामये?
- (ङ) केषां माला रमणीया?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत—

- (क) कविः किमर्थं प्रकृतेः शरणम् इच्छति?
 (ख) कस्मात् कारणात् महानगरेषु संसरणं कठिनं वर्तते?
 (ग) अस्माकं पर्यावरणे किं किं दूषितम् अस्ति?
 (घ) कविः कुत्र सञ्चरणं कर्तुम् इच्छति?
 (ङ) स्वस्थजीवनाय कीदृशे वातावरणे भ्रमणीयम्?
 (च) अन्तिमे पद्यांशे कवेः का कामना अस्ति?

3. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत—

- (क) प्रकृतिः + = प्रकृतिरेव
 (ख) स्यात् + + = स्यान्नैव
 (ग) + अनन्ताः = ह्यनन्ताः
 (घ) बहिः + अन्तः + जगति =
 (ङ) + नगरात् = अस्मान्नगरात्
 (च) सम् + चरणम् =
 (छ) धूमम् + मुञ्चति =

4. अधोलिखितानाम् अव्ययानां सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत—

- भृशम्, यत्र, तत्र, अत्र, अपि, एव, सदा, बहिः
 (क) इदानीं वायुमण्डलं प्रदूषितमस्ति।
 (ख) जीवनं दुर्वहम् अस्ति।
 (ग) प्राकृतिक-वातावरणे क्षणं सञ्चरणम् लाभदायकं भवति।
 (घ) पर्यावरणस्य संरक्षणम् प्रकृतेः आराधना।
 (ङ) समयस्य सदुपयोगः करणीयः।
 (च) भूकम्पित-समये गमनमेव उचितं भवति।
 (छ) हरीतिमा शुचि पर्यावरणम्।

5. (अ) अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं लिखत—

- (क) सलिलम्
 (ख) आम्रम्

- (ग) वनम्
 (घ) शरीरम्
 (ङ) कुटिलम्
 (च) पाषाणः

(आ) अधोलिखितपदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत-

- (क) सुकरम्
 (ख) दूषितम्
 (ग) गृह्णन्ती
 (घ) निर्मलम्
 (ङ) दानवाय
 (च) सान्ताः

6. उदाहरणमनुसृत्य पाठात् चित्वा च समस्तपदानि समासनाम च लिखत-

यथा-विग्रह पदानि	समस्तपद	समासनाम
(क) मलेन सहितम्	समलम्	अव्ययीभाव
(ख) हरिताः च ये तरवः (तेषां)	
(ग) ललिताः च याः लताः (तासाम्)	
(घ) नवा मालिका	
(ङ) धृतः सुखसन्देशः येन (तम्)	
(च) कज्जलम् इव मलिनम्	
(छ) दुर्दान्तैः दशनैः	

7. रेखाङ्कित-पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

- (क) शकटीयानम् कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति।
 (ख) उद्याने पक्षिणां कलरवं चेतः प्रसादयति।

- (ग) पाषाणीसभ्यतायां लतातरुगुल्माः प्रस्तरतले पिष्टाः सन्ति।
 (घ) महानगरेषु वाहनानाम् अनन्ताः पङ्क्तयः धावन्ति।
 (ङ) प्रकृत्याः सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते।

योग्यताविस्तारः

यह पाठ आधुनिक संस्कृत कवि हरिदत्त शर्मा के रचना संग्रह 'लसल्लतिका' से संकलित है। इसमें कवि ने महानगरों की यात्रिक-बहुलता से बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह लौहचक्र तन-मन का शोषक है, जिससे वायुमण्डल और भूमण्डल दोनों मलिन हो रहे हैं। कवि महानगरीय जीवन से दूर, नदी-निर्झर, वृक्षसमूह, लताकुञ्ज एवं पक्षियों से गुञ्जित वनप्रदेशों की ओर चलने की अभिलाषा व्यक्त करता है।

समास - समसनं समासः

समास का शाब्दिक अर्थ होता है- संक्षेप। दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से जो नया और संक्षिप्त रूप बनता है, वह समास कहलाता है। समास के मुख्यतः चार भेद हैं-

1. अव्ययीभाव
2. तत्पुरुष
3. बहुव्रीहि
4. द्वन्द्व

1. अव्ययीभाव

इस समास में पहला पद अव्यय होता है और वही प्रधान होता है और समस्तपद अव्यय बन जाता है।

यथा- निर्मक्षिकम्-मक्षिकाणाम् अभावः।

यहाँ प्रथमपद निर् है और द्वितीयपद मक्षिकम् है। यहाँ मक्षिका की प्रधानता न होकर मक्षिका का अभाव प्रधान है, अतः यहाँ अव्ययीभाव समास है। कुछ अन्य उदाहरण देखें-

- | | | | | |
|-----------------|---|--------------------|---|------------------------|
| (i) उपग्रामम् | - | ग्रामस्य समीपे | - | (समीपता की प्रधानता) |
| (ii) निर्जनम् | - | जनानाम् अभावः | - | (अभाव की प्रधानता) |
| (iii) अनुरथम् | - | रथस्य पश्चात् | - | (पश्चात् की प्रधानता) |
| (iv) प्रतिगृहम् | - | गृहं गृहं प्रति | - | (प्रत्येक की प्रधानता) |
| (v) यथाशक्ति | - | शक्तिम् अनतिक्रम्य | - | (सीमा की प्रधानता) |
| (vi) सचक्रम् | - | चक्रेण सहितम् | - | (सहित की प्रधानता) |

2. तत्पुरुष

‘प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः’ इस समास में प्रायः उत्तरपद की प्रधानता होती है और पूर्व पद उत्तरपद के विशेषण का कार्य करता है। समस्तपद में पूर्वपद की विभक्ति का लोप हो जाता है।

यथा- राजपुरुषः अर्थात् राजा का पुरुष। यहाँ राजा की प्रधानता न होकर पुरुष की प्रधानता है।

- | | | |
|----------------|---|---------------|
| (i) ग्रामगतः | - | ग्रामं गतः। |
| (ii) शरणागतः | - | शरणम् आगतः। |
| (iii) देशभक्तः | - | देशस्य भक्तः। |
| (iv) सिंहभीतः | - | सिंहात् भीतः। |
| (v) भयापन्नः | - | भयम् आपन्नः। |
| (vi) हरित्रातः | - | हरिणा त्रातः। |

तत्पुरुष समास के दो प्रमुख भेद हैं—कर्मधारय और द्विगु।

- (ii) **कर्मधारय**— इस समास में एक पद विशेष्य तथा दूसरा पद पहले पद का विशेषण होता है। विशेषण विशेष्य भाव के अतिरिक्त उपमान उपमेय भाव भी कर्मधारय समास का लक्षण है।

यथा-

- | | | |
|-------------|---|---------------------|
| पीताम्बरम् | - | पीतं च तत् अम्बरम्। |
| महापुरुषः | - | महान् च असौ पुरुषः। |
| कज्जलमलिनम् | - | कज्जलम् इव मलिनम्। |
| नीलकमलम् | - | नीलं च तत् कमलम्। |
| मीननयनम् | - | मीन इव नयनम्। |
| मुखकमलम् | - | कमलम् इव मुखम्। |

- (ii) **द्विगु**— ‘संख्यापूर्वो द्विगुः’ इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है और समाहार (एकत्रीकरण या समूह) अर्थ की प्रधानता होती है।

यथा- त्रिभुजम् - त्रयाणां भुजानां समाहारः।

इसमें पूर्वपद ‘त्रि’ संख्यावाची है।

- | | | |
|------------|---|----------------------------|
| पंचपात्रम् | - | पंचानां पात्राणां समाहारः। |
| पंचवटी | - | पंचानां वटानां समाहारः। |
| सप्तर्षिः | - | सप्तानां ऋषीणां समाहारः। |
| चतुर्युगम् | - | चतुर्णां युगानां समाहारः। |

3. बहुव्रीहि

‘अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः’ इस समास में पूर्व तथा उत्तर पदों की प्रधानता न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है।

यथा-

पीताम्बरः	- पीतम् अम्बरम् यस्य सः (विष्णुः)। यहाँ न तो पीतम् शब्द की प्रधानता है और न अम्बरम् शब्द की अपितु पीताम्बरधारी किसी अन्य व्यक्ति (विष्णु) की प्रधानता है।
नीलकण्ठः	- नीलः कण्ठः यस्य सः (शिवः)।
दशाननः	- दश आननानि यस्य सः (रावणः)।
अनेककोटिसारः	- अनेककोटिः सारः (धनम्) यस्य सः।
विगलितसमृद्धिम्	- विगलिता समृद्धिः यस्य तम् (पुरुषम्)।
प्रक्षालितपादम्	- प्रक्षालितौ पादौ यस्य तम् (जनम्)।

4. द्वन्द्व

‘उभयपदार्थप्रधानः द्वन्द्वः’ इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों की समान रूप से प्रधानता होती है। पदों के बीच में ‘च’ का प्रयोग विग्रह में होता है।

यथा-

रामलक्ष्मणौ	- रामश्च लक्ष्मणश्च।
पितरौ	- माता च पिता च।
धर्मार्थकाममोक्षाः	- धर्मश्च, अर्थश्च, कामश्च, मोक्षश्च।
वसन्तग्रीष्मशिशिराः	- वसन्तश्च ग्रीष्मश्च शिशिरश्च।

कविपरिचय - प्रो. हरिदत्त शर्मा इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृत के आचार्य रहे हैं। इनके कई संस्कृत काव्य प्रकाशित हो चुके हैं। जैसे- गीतकंदलिका, त्रिपथगा, उत्कलिका, बालगीताली, आक्रन्दनम्, लसल्लतिका इत्यादि। इनकी रचनाओं में समाज की विसंगतियों के प्रति आक्रोश तथा स्वस्थ वातावरण के प्रति दिशानिर्देश के भाव प्राप्त होते हैं।

भावविस्तारः

पृथिवी, जलं, तेजो वायुराकाशश्चेति पञ्चमहाभूतानि प्रकृतेः प्रमुखतत्त्वानि। एतैः तत्त्वैरेव पर्यावरणस्य रचना भवति। आन्नियते परितः समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सर्वविधजीवनसुखं ददाति। अस्माभिः सदैव तथा प्रयतितव्यं यथा जलं स्थलं गगनञ्च निर्मलं स्यात्। पर्यावरणसम्बद्धाः केचन श्लोकाः अधोलिखिताः सन्ति-

यथा-

पृथिवीं परितो व्याप्य, तामाच्छाद्य स्थितं च यत्।
जगदाधाररूपेण, पर्यावरणमुच्यते॥

प्रदूषणविषये-

सृष्टौ स्थितौ विनाशे च नृविज्ञैर्बहुनाशकम्।
पञ्चतत्त्वविरुद्धं यत्साधितं तत्प्रदूषणम्॥

वायुप्रदूषणविषये-

प्रक्षिप्तो वाहनैर्धूमः कृष्णः बहवपकारकः।
दुष्टैरसायनैर्युक्तो घातकः श्वासरुग्वहः॥

जलप्रदूषणविषये-

यन्त्रशाला परित्यक्तैर्नगरे दूषितद्रवैः।
नदीनदौ समुद्राश्च प्रक्षिप्तैर्दूषणं गताः॥

प्रदूषण निवारणाय संरक्षणाय च-

शोधनं रोपणं रक्षावर्धनं वायुवारिणः।
वनानां वन्यवस्तूनां भूमेः संरक्षणं वरम्॥

एते श्लोकाः पर्यावरणकाव्यात् संकलिताः सन्ति।

तत्सम-तद्भव-शब्दानामध्ययनम्-

अधोलिखितानां तत्समशब्दानां तदुद्भूतानां च तद्भवशब्दानां परिचयः करणीयः-

तत्सम		तद्भव
प्रस्तर	-	पत्थर
वाष्प	-	भाप
दुर्वह	-	दूभर
वक्र	-	बाँका
कज्जल	-	काजल
चाकचिक्य	-	चकाचक, चकाचौंध
धूमः	-	धुआँ
शतम्	-	सौ (100)
बहिः	-	बाहर

छन्दः परिचयः

अस्मिन् गीते शुचि पर्यावरणम् इति ध्रुवकं (स्थायी) वर्तते। तदतिरिक्तं सर्वत्र प्रतिपङ्क्ति 26 मात्राः सन्ति। इदं गीतिकाच्छन्दसः रूपमस्ति।